[The Vice-Chairman]

that this House recommends to the Lok Sabha that the Lok Sabha do join in the said Joint Committee and communicate to this House the names of members to be appointed by the Lok Sabha to the Joint Committee."

The motion was adopted.

THE OATHS BILL, 1968

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LAW AND IN THE DEPARTMENT OF SOCIAL WELFARE (SHRI MOHAMMED YUNUS SALEEM) : Sir, I beg to move :

"That the following amendments made by the Lok Sabha in the Oaths Bill , 1968, be taken into consideration, namely :—

Enacting Formula

1. That at page 1, line 1, for "Nineteenth" substitute "Twentieth".

Clause 1

2. That at page 1, line 3, for "1968" substitute "1969".

Mr. Vice-Chairman, Sir, this Bill was passed by this House at its meeting held on 14th August, 1968 and transmitted to the Lok Sabha for consideration. The Lok Sabha at its sitting held on 1st December, 1969, passed the Bill with amendments. Lines 1 to 3 at page 1 of the Bill as passed by the Rajya Sabha run as follows :—

"BE it enacted by Parliament in the Nineteenth Year of the Republic of India as follows—

This Act may be called the Oaths Act, 1968." Since this has been passed by the Lok Sabha in 1969, "1968" may be substituted by "1969" and "Nineteenth" may be substituted by "Twentieth". These are small formal amendments.

The question was proposed.

श्री राजनारायण : (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन् मैं पहले इस बात को समझ लूं और आपके द्वारा सदन के सम्मानित सदस्यों को भी समझा दूं कि एकाएक यह विधेयक इस समय आ गया क्योंकि आज कार्यक्रम में यह नहीं था। तो इससे जितने कन्सर्निग पेपर्स हों जब तक वे सारे के सारे पेपर हमको न मिल जाए तब तक इस पर चर्चा करना अपने द्वारा निर्मित नियमों का उल्लंघन होगा।

श्री चन्द्रशेखर : (उत्तर प्रदेश) : वह वेब कर दिया गया है।

राजनारायण : मैं आपके द्वारा पहले तो यह निवेदन करना चाहता हूं कि ओथ का फार्म पहले क्या था और अब क्या है। इस विधेयक की हिन्दी कापी हमको चाहिए।

श्री चन्द्रशेखर : जब तक वह लाबी से आएगी तब तक आप बोलिए।

श्री राजनारायण : जब इस विषय को चर्चा के लिए यहां पर ला ही दिया गया है तो मैं यह चाहूंगा कि तब तक हम विषय को आगे बढाएं। इस में अंग्रेजी में लिखा हुआ है—

"In the name of God." What is God?

मैं यह जानना चाहता हूं कि "गाड" क्या हैं। गाड की परिभाषा होनी चाहिए।

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पी० सेठी) : यह बहुत लिमिटेड मामला है।

श्री राजनारायण : लिमिटेड हो या अनलिमिटेड। जब यह विषय उपस्थित हो गया हैं तब उस पर निर्भीकता के साथ अपने विचारों का प्रकाशन करना चाहिए। इसलिए मैं यहां पर खड़ा हुआ हूं कि और मैं जानना चाहता हूं— What is God?

क्या "गाड" वही है जिसको ईश्वर कहा जाता है।

श्री चन्द्रशेखर : बिल्कुल वही।

श्री राजनारायण : चन्द्रशेखर की बात को तो मैं आधिकारिक मानूंगा नहीं। यह सरकार की ओर से आना चाहिये। क्या ईश्वर वही है जिसको गांधी जी ने सत्य और प्रेम कहा है ?

श्री ओम् मेहता : (जम्मू और कश्मीर) : वही ।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, इन को समझाइए यह सदन है, यह बाजार नहीं है, अल्लड ढंग से चले आ रहे हैं "वही-वही" कहते हुए यह सामान्य सदस्य नहीं है, व्हिप हैं।

श्री चन्द्र शेखर : जब राजनारायण जी सदन में उपस्थित रहते हैं तब हम बाजार सिनेमाघर, थियेटर सभी का आनन्द ले लेते हैं ।

श्री राजनारायण : अगर हमारे मित्र चन्द्रशेखर, जो बहुत दिनो तक हमारे दल के सदस्य के रूप में हमारे साथ थे, कहते हैं कि सदन में हमारी उपस्थिति से वे आल्हादित होते हैं और उसको वे अनेक प्रकार, अनेक स्वरुप और अनेक शक्ल में देखते हैं तो भी मैं उनसे यह कहूंगा कि सदन, सदन ही है, इसको किसी मेला या शक्ल में मत बदलें इसको बाजर की शक्ल में मत बदलें, यह आदरणीय सदन है, उसका सम्मान सदन के सभी सम्मानित सदस्यों को करना चाहिए।

इस समय जो प्रश्न यहां पर उपस्थित है वह कोई मामूली प्रश्न नहीं है इसको हल्के ढंग से नही लिया जाना चाहिए ।

श्री नेकीराम (हरियाणा) : राजनारायण जी, आप यहां पर रामायण की दोहचापाई पढते है तो क्या आप रामलीला में काम करते हैं ?

श्री राजनारायण : सुन लिया आपने ! पता नहीं तुलसीदास जी सत्य है या असत्य। उनका कहना है :

"मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिले विरंचि सम।
फूले-फलहि न बेत, जदपि सुधा बरसहि जलद ।।

तुलसीदास जी ने कहा कि अगर बादल से अमृत भी बरसे तो भी बेत फूलता फलता नहीं है, मगर हमने देखा है कि तुलसीदास जी की यह पंक्ति गलत साबित हो रही है, बेत फूलता है और अगर आप आचार्य रामचन्द्र जी शुक्ल की टीका पढ़ेंगे तो देखेंगे कि उन्होंने तुलसीदास जी के इस कथन को सही नहीं माना ।

श्रीमन्, अभी तक इसकी हिन्दी कापी नही आई। देखिए, क्या यह हिन्दी के साथ प्रेम और समानता का व्यवहार हो रहा है। हमने पुरी लिस्ट दी है कि हिन्दी के लिए क्या ततनख्वाह मिलती है और अंग्रेजी के लिए क्या तनख्वाह मिलती है। यहां तमाम के तमाम मामले योंही चलते जाते है और समय खर्च होता रहता है। ऐसे विषयों पर जिनसे नई शक्तियां पैदा हों, चर्चा नही होती। कारण क्या है ?

आज तक इस सदन मे या इसके बाहर भी हमने ईश्वर के नाम पर कोई शपथ नही लीं, यह मैं बताना चाहता हूं। सन 1952 में कांग्रेस पार्टी ने हमारे खिलाफ एक इलेक्शन पिटीशन कर दी थी, उसमें कह दिया कि राजनारायण ईश्वर में विश्वास नही करते, जनेऊ नहीं पहनते, इसलिए जो व्यक्ति ईश्वर में विश्वास न करे...

SHRI MOHAMMED YUNUS SALEEM : How are these arguments relevant, Sir?

SHRI RAJNARAIN : They are relevant. If they are not relevant, how is your existence relevant?

SHRI MOHAMMED YUNUS SALEEM : If you can justify your existence, I can also justify mine.

श्री राजनारायण : क्या, बात कर रहे हैं ? केवल मंत्री बन जाना तो तमाम अक्ल का सबूत नहीं है। मंत्री बन कर इनसान को सोबर होना चाहिए। मैं जानता हूं मंत्री जी कलकत्ता जाते हैं तो सेन्ट्रल होटल में ठहरते हैं। जब बुद्धि और विचार की बात हो रही हो तो उसे ध्यान से सुना जाय। यहां लिखा है—

[श्री राजनारायण]

FORM NO. 1

"I do swear in the name of God / solemnly affirm that what I shall state shall be the truth . . ."

श्रीमन्, इसकी हिन्दी कापी दिलवाइए।

उपसभाध्यक्ष (श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी) : आ जायेगी, आप बोलिये।

श्री राजनारायण : यह इसमें लिखा हुआ कि "मैं गाड के नाम पर यह शपथ लेता हूं"। तो जिसके नाम पर. . . .पाइन्ट आफ आर्डर। मैं कहना चाहता हूं किसी भी सम्मानित सदस्य को आपकी तरफ पीठ नहीं करनी चाहिए या अपना पुट्ठा नही दिखाना चाहिए।

श्री चन्द्रशेखर : आप उंगली भी नहीं दिखा सकते।

श्री राजनारायण : हमारी उंगली दिखाने की आदत चेयरमैंन के उंगली दिखाने के कारण ऐसी बन गई है। इनसान कभी कभी अपनी आदत दूसरे को देखकर बदल भी लेता है। तो चेयरमंन साहब की आदत के कारण लाचारी में हमने अपनी भी आदत वैसी ही बना ली।

उपसभाध्यक्ष (श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी) : विषय पर जाइए।

श्री राजनारायण : विषय वही है कि गाड के नाम पर हम शपथ क्यों लें। गाड का अर्थ क्या है? वे हमारे मंत्री, जो बेचारे आ गए किसी कारणवश समझते नहीं हैं। अगर गाड की कोई शक्ल है, गाड का कोई अर्थ है तो हमें बताया जाना चाहिए कि गाड की क्या शक्ल है उसकी सत्ता क्या है।

अब मैं आपके द्वारा पहले भारतीय दर्शन में आना चाहता हूं, तब मैं पाश्चात्य दर्शन में जाऊंगा।

श्री चन्द्रशेखर : अच्छा।

श्री राजनारायण : चन्द्रशेखर जी जानते होंगे—वे उस समय हमारे साथ थे— कि जब श्रद्धेय आचार्य नरेन्द्रदेव कांग्रेस पार्टी को छोड़ कर फैजाबाद से चुनाव लड़ रहे थे तो उस समय वे बाबा राघवदास के विरोध में खड़े थे। श्री गोविन्द वल्लभ पन्त जी मुख्य मंत्री थ। मैं उनकी बड़ी इज्जत करता हूं, यद्यपि प्राइम मिनिस्टर साहिबा ने उनकी भी निन्दा कर दी। भारतीय गणतंत्र में जब पहला चुनाव हुआ और गोविन्द वल्लभ पन्त जी मुख्य मंत्री बने तो मैं विरोधी दल का पहला नेता था। तो हम पन्त जी की बड़ी इज्जत करते हैं, मगर प्राइम मिनिस्टर साहिबा ने बरेली में कल कहा कि उत्तर प्रदेश के जो लोग एडमिनिस्ट्रेशन में थे वे नेहरू जी से लड़े, वे लालबहादुर जी से लड़े और मेरा भी विरोध कर रहे हैं। इसका मतलब कि उन्होंने श्री गोविन्द वल्लभ पन्त की भी भर्त्सना कर दी क्योंकि उस समय प्रथम मुख्य मंत्री वही थे।

SHRI MOHAMMED YUNUS SALEEM : It is not relevant, Sir.

श्री राजनारायण : यहां पर के० सी० पन्त बैठे हुए हैं और चूंकि वे भी मंत्रिपरिषद के सम्मनित सदस्य हैं. . . (*Interruptions*) हल्ला मत करो, हल्ला करने से कुछ बनता नहीं। तो पंत जी ने जब उद्घाटन भाषण किया तो उन्होंने यही कहा कि आचार्य नरेन्द्र देव ईश्वर में विश्वास नहीं करते।

यह जानते थे कि अयोध्या की जनता धर्मभीरू है। चुनाव अभियान में पहला भाषण-उन्होंने यह किया। मगर मैं आज श्री संपूर्णानन्द जी को दाद देना चाहूंगा कि वह अपनी बुद्धि से कितने निष्पक्ष थे। पन्त जी ने उनसे कहा कि आप को यह लेख नही लिखना चाहिए था, मगर संपूर्णानन्द जी घर मंत्री थे। संपूर्णानन्द जी ने कहा कि पंत जी मुख्य मंत्री हैं और उन्होंने जो ईश्वर अनीश्वर का विवाद खड़ा किया है वह दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि मैं भारतीय दर्शन का विद्यार्थी हूं। मैं जानता हूं कि भारतवर्ष के दर्शन में जितनी प्रतिष्ठा और सम्मान एक ईश्वरवादी को है उतना ही एक अनीश्वरवादी की है। और संम्पूर्णानन्द जी नेएक पूरा क्रम दिया कि अगर

बुद्ध अनीश्वरवादी थे तो क्या वे भारतीय दर्शन में स्थान नही पाय ? उन्होंने कहा कि चर्वाक, जिसके ग्रंथों को देश के रूढ़िवादियों ने गायब कर दिया, उस के सारे लिखित ग्रन्थों को गायब कर दिया और जो टीका टिप्पणी में प्रसंगवश आता है, क्या उसका स्थान भारतीय दर्शन में नहीं है ? ऐसे बहुत से उदाहरण हैं और श्रीमन्, जब यह ईश्वर और अनीश्वर का प्रश्न है तो यह एक घंटे या दो घंटे का विषय नहीं है। क्यों हम ईश्वर के नाम पर शपथ लें आज हमारा यह प्रश्न उपस्थित है।

जब हम जेल में जाते हैं तो वहां अपने कमरे में लिख देते हैं कि ईश्वर मानव मस्तिष्क का काल्पनिक बच्चा है। जिस चीज को कोई न जाने वह ईश्वर है। आज दर्शन में दो ही टकराव हैं—अजेय और अज्ञात, कुछ नोएबिल और अननोन, अननोएबिल और अननोन जो ईश्वरवादी दर्शन है, जो ईश्वर में विश्वास करता है वह कहता है कि कुछ चीज है जो अज्ञय है। अज्ञेय का अर्थ हमारे मौलाना साहब नही समझेंगे। अज्ञेय का अर्थ होता है अननोएबिल। जो चीज जानी ही नही जा सकती। तो क्या यह सरकार चाहती है कि जो चीज जानी ही न जा सके हम उस की शपथ लें। यह तो पागलपन की निशानी है—पिगहेडेडनेस। चन्द्रशेखर जी से मैं कहना चाहूगा कि ये जरा हमारे समर्थन में खड़े हो जायें। जो चीज जानी ही नहीं जा सकती आज मंत्री जी कहते हैं कि मैं उसकी शपथ लूं। कैसे शपथ लूं, भाई किस चीज की शपथ लू।

श्री चंद्रशेखर : लेकन दुर्भाग्य यह है कि आप उसी की कृति में मौजूद हैं।

श्री राजनारायण : इस लिए भारतीय दर्शन के इस सार को समझना चाहिए और आज जो विद्वद जगत है दर्शन शास्त्र में वह इस बात पर अच्छी तरह से ध्यान दे। जहां तक हमारे मानने का प्रश्न है, हम अननोएबिल को नहीं मानते। हम मानते हैं अननोन। यह चीज अभी तक जानी नहीं गयी है मगर जानी जा सकती है। मगर अगर हम अननोन के एग्जिसटेंस को मान लें, अज्ञेय के अस्तित्व को मान लें तो हम गढ़े में गिर जायेंगे, तब हम भाग्यवादी हो जायेंगे तब हम भगवानवादी हो जायेंगे और तब आज जो हम कहते हैं कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है हमरा यहा वाक्य अधूरा और निरर्थक हो जायेगा। इसलिए आज हमको सफाई के साथ इस सदन मे इस बात पर गंभीरता से विचार करना चाहिए, समय देकर और इसमें कोई जल्दीबाजी नही होनी चाहिए कि हम ईश्वर के नाम की शपथ क्यों लें ? क्या सरकार के पास या सरकार के किसी मंत्री के पास कोई भी ऐसी जानकारी है जिससे वह हमको बता सकता है कि यह ईश्वर है ? ओथ का सवाल है। हम ओथ क्यों लें ? क्यों रखी गयी है यहां ईश्वर के नाम की ओथ ? यह तो मैंने कहा कि शूकर मस्तिष्क की उपज है, यह कोई मानव बुद्धि की उपज नही है।

श्री चन्द्रशेखर : उपसभाध्यक्ष महोदय, राजनारायण जी के भाषण में आनन्द तो बहुत आ रहा है, लेकिन दुख यह है कि राजनारायण जी को हिन्दी को विधेयक मिला नहीं . . .

श्री राजनारायण : मिल गया।

श्री चन्द्रशेखर : मिल गया तो उस में आज जो संशोधन सदन के सामने है वह ओथ के बारे में नही है। यह विधेयक इस सदन से पारित हो चुका है, 1968 में पारित हुआ था और लोक सभा में 1969 में पारित हुआ। तो 1968 की जगह 1969 कर दिया जाय, केवल संशोधन इतना ही है, लेकिन भगवान बेचारा फंस गया है उनके कब्जे में तो मैं नम्रतापूर्वक आप से अनुरोध करुंगा कि आप जरा माननीय राजनारायण जी से कहिये कि वे भगवान की व्याख्या किसी और मोके पर करें। साढे चार बज रहे हैं। इसलिए . . .

श्री राजनारायण : चन्द्रशेखर जी ने जो स्मरण कराया है तो वह एक टेक्निकल बात है। 68 की जगह 69 रखा ही क्यों जाय ? जब

[श्री राजनारायण]
संशोधन के लिए आया है तो हम फिर से संशोधन पर विचार ही क्यों न कर लें? हम क्यों नहीं कहें कि इस को प्रवर समिति में भेजा जाय और इस के स्कोप को बढाया जाय।

श्री कृष्ण कांत : (हरियाणा) : आपने उस के लिए अमेंडमेंट दिया है?

श्री राजनारायण : यह यहां आने वाला नहीं था। आप माफ कीजियेगा। हमारा और कृष्ण कान्त जी का बड़ा स्नेह है। जब हम उनको देखते है तो हमको बड़ा तरस आता है उन पर कि यह कैसे काशी विश्वविद्यालय में इतने दिनो तक रह कर अज्ञानी रहे। यह काशी विश्वविद्यालय के प्रोड्यूस हैं, हमारे साथ रहे हैं कुछ दिन तक, मगर कहां जा कर फंस गये।

एक माननीय सदस्य : इस बात का अफसोस है कि आप के साथ रहे हैं।

श्री राजनारायण : अब मैं मानता हूं कि भारतवर्ष में जो हिन्दू दर्शन हैं उन में 6 आस्तिक दर्शन है और 6 नास्तिक दर्शन हैं। उन 6 आस्तिक दर्शन में एक सांख्य भी आता है। मैं समझता हूं कि शायद हमारे मित्र के० के० शाह अब कुछ धीरे धीरे हमारी बात में रस लेने लगे हैं। आप देखिये कि सांख्य भी आस्तिक माना जाता है। सांख्य नास्तिक दर्शन की परिधि में नहीं है, मगर सांख्य ने ईश्वर की कल्पना कभी नही की। सांख्य ने कहा है कि समाज के केवल दो ही तत्व हैं– प्रकृति और पुरुष। प्रकृति नृत्य करती है और पुरुष केवल दृष्टा है। पुरुष करता कुछ नहीं, वह देखा करता है और सारा कार्य कलाप विश्व का जो होता है वह प्रकृति के द्वारा होता है। तो...

श्री चन्द्रशेखर : आप क्या हैं?

श्री राजनारायण : मै तो प्रकृति का अंग हूं। तो मै जो कहता हूं, सुनिये।

श्री चन्द्रशेखर : पुरुष हैं या नहीं?

श्री राजनारायण : मैं आ रहा हूं उसी पर। सांख्य भारतवर्ष में सबसे विकसित दर्शन कहा जाता है। तो मै आप के द्वारा श्री चन्द्रशेखर को यह समझाना चाहता हूं कि...

श्री महेश्वर नाथ कौल (नाम निर्देशित) : और हाऊस को भी।

श्री राजनारायण : और सदन के सदस्यों को भी कि अगर हम दृष्टा को हटा दें, दृष्टा न रहे, केवल प्रकृति ही रहे, क्योंकि प्रकृति ही नटी है, वही नाट्य करती है तो समाज के विकास में कोई अवरुद्धता नहीं आयेगी, समाज चलता रहेगा। इसलिए पुरुष वहां पर अनावश्यक हो गया है। अगर आज मैं सांख्य का लेखक होता तो मैं यह कह देता कि सांख्य में अब पुरुष की आवश्यकता नहीं रह गयी है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि यहां पर ईश्वर शब्द अनावश्यक हो गया है क्योंकि ईश्वर को अगर हम मान लेते हैं तो हम अज्ञेय की परिधि में चले जाते हैं, अननोएबिल की परिधि में चले जाते है, पोंगावादी हो जाते हैं। तब जो पोंगापंथी लोग रूढ़िवादी और कट्टरपंथी लोग कहा करते हैं कि यह हरिजन है, यह तो शूद्र है, यह तो मुसलमान है, यह तो हिन्दू है, यानी मानव समाज का लगाव होने लगता है, मानव समाज विभिन्न गुटों में बांटा जाने लगता है...

उपसभाध्यक्ष (श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी) : अब आप वाइंड अप करिये।

श्री राजनारायण : तो क्या हमारे यूनुस सलीम साहब समाज की इस खराबी को समझेंगे? यह लेक्चर देने से ठीक नही होगी। सांप्रदायिकता का विनाश हो यह लेक्चर रोज होता रहता है, लेकिन सांप्रदायिकता का विनाश नहीं हो रहा है। यह एक दार्शनिक पहलू है और इसकी गंभीरता में पहुंच कर हम को इस की जड़ में जाना होगा। जब तक हम इस जड़ में नहीं जायेंगे तब तक विश्व की इस समस्या का समाधान नहीं होगा। हम चाहते है कि इस मौके पर हम विश्व को इस समस्या का समाधान दें और आप के द्वारा सदन के सम्मानित सदस्यों से निवेदन करें कि आप सदन के सम्मानित सदस्य बौद्धिक स्तर पर इस बात को मान लें कि जो मनुष्य है वह ईश्वर है। हम ही ईश्वर हैं, हम अपने ईमान, सत्य और निष्ठा से जो बात कहे जो प्रतिज्ञा करें वही प्रतिज्ञा है हम झूठ क्यों बोलें, एक असत्य क्यों बोलें। एक

चीज जो है नही उसकी शपथ क्यों लें। आज हम देख रहे हैं कि एक दूसरे तरह की बातें हो रही हैं। आज सुबह मैं लखनऊ से आ रहा था, मैं भी उसी डिब्बे में था जिस में आप थे, अखबार पढ़ा तो उस में था कि श्री भानु प्रकाश गुजरात गये हैं ताकि राजपूत जो हैं स्वतंत्र पार्टी में उन राजपूतों को फ़िट करेंगे प्राइम मिनिस्टर का समर्थन देने के लियें। एक तरफ़ तो यहां यह कहते हैं कि हम स्वतंत्र पार्टी का सहयोग नहीं लेंगे, वह प्रतिक्रिया वादी है, जनसंघ प्रतिक्रियावादी है, और दूसरी तरफ़ उपमंत्री श्री भानु प्रकाश जी गुजरात गये उन का समर्थन प्राप्त करने के लिये क्योंकि वह अपने को समझते है कि हम राजपूतानी मां के पेट से पैदा हैं इसलिये वहा जाते हैं और वहां जाकर तमाम राजपूत चाहे स्वतंत्र पार्टी में हों, चाहे जनसंघ में हों, कोई भी हो, उनको प्रधान मंत्री साहिबा के समर्थन में एक कतार में खड़ा करने की कोशिश करने के लिये जाते हैं। वही ईश्वर अनर्थ करा रहा है। क्योंकि जब हम ईश्वर मानेंगे, अगर हम ईश्वर मान लें कि सभी चीज का कर्ताधर्ता ईश्वर ही है तो माननीय भानु प्रकाश जी यह सकते हैं कि ईश्वर ने हमको गुजरात भेजा, उस की प्रेरणा से गुजरात गये, ईश्वर ने स्वप्न दिया कि अगर तुम चले जाओगे तो राजपुतानी मां से जितने पैदा लोग हैं वे सब प्रधान मंत्री के समर्थन में आ जायेंगे। तो माननीय यूनिस जी आप बड़ा अनर्थ कर रहे हो इस ईश्वर शब्द को यहां पर रख कर। आज तक जो मनुष्य की तरक्की का रास्ता है उस रास्ते को रोकने की साजिश में फंस रहे हो। इसलिये इस पर विचार करें कि इस को आज पास करा लेना ही जरूरी नही है। जो तर्क मैं दे रहा हू उस पर सोचा जाय कि क्या है। अगर यह ईश्वर वही है जो खुदा है तो फिर झगड़ा क्यों। फिर यहां पर खुदा क्यों नहीं लिखा गया ?

एक व्यक्ति था जिसके बारे में चर्चा हुई। और वह था डा० राम मनोहर लोहिया। 25 नवम्बर, 1949 को जब उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन का प्रदर्शन किया था उन्होंने कहा था कि मुझको कभी सरकार में बैठने मत देना, मैं सरकार में कभी नहीं बैठूंगा क्यों कि जब किसान आये थे तो पंत जी भाग गये थे। तो नारा लगा कि "किसान जागा, पंत भागा"। तो फ़ैजाबाद का एक गरीब किसान आचार्य नरेन्द्र देव के पास गया, उनको दमा आ रहा था, उसने कहा कि आचार्य जी पंत जी भाग गये, हाथी का मस्तक खाली नहीं रहेगा, डा० लोहिया को उस हाथी के मस्तक पर बैठा दिया जाय। उसका उदारहण देते हुए उन्होंने कहा कि मैं आज कहे देता हूं कि मैं सरकार में नही जाऊंगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री दत्तोपन्त ठेंगडी) आप कृपया अपना भाषण समाप्त करें।

श्री राजनारायण : मान्यवर, मेरा कहना है कि इस समय इस विधेयक को पारित न किया जाय। आप मुझे बोलने नही दे रहे है, और अपनी पूरी बात कह भी नहीं पा रहा हूं, और यह विधेयक इस समय में आभी गया है, इसलिये आज इसको पारित न कराया जाय। यहां विद्वत समाज के लोग आए जो लोग कोठरियों में बैठकर हां, हां कहते है, इसी ईश्वर ने अनर्थ कराया है कि राष्ट्रपति पद का चुनाव होने के बाद श्री वी० वी० गिरी वैंकटेश्वर मंदिर मे पुजारियो के चरणामृत लेने गये। इसी तरह उप-राष्ट्रपति का चुनाव होने के बाद, श्री गोपाल स्वरुप पाठक ने वैंकटेश्वरनाथ मन्दिर में जाकर पुजारियों का चरण छुआ। क्या जरूरत है कि हमारे जनतंत्र का राष्ट्रपति, जो सर्वप्रथम पुरुष होता है, वह जाकर के श्री वेंकटेश्वर मन्दिर में पुजारियों का पैर छूते इसलिये कि वह सर्वश्रेष्ठ है। तो आज इस वाक्य का विश्लेषण करना चाहिये कि जिनके हाथ पुजारियों को श्रेष्ठ मानकर पैर छते है, उन्ही के पैर हरिजनों को नीच समझ कर ठोकर से मारते है क्योंकि जहां समाज मे किसी की श्रेष्ठता की बात प्रतिष्ठित हो गयी तो उसी श्रेष्ठता से अवनति की बात भी प्रतिष्ठित होती है। इसलिये मैं कह रहा हूं अगर आप की आज्ञा

[श्री राजनारायण]

न मानूं तो वह भी हमारे लिये उचित नही होगा। लेकिन जिस समय हम ठान लें कि नहीं अब इनकी आज्ञा का उल्लंघन करना हमारा धर्म है, तो फिर हमको या तो सदन के बाहर जाना होगा, या श्री के० के० शाह से कहेंगे कि आप प्रस्ताव कीजिए और पुलिस द्वारा राजनारायण को सदन से बाहर निकाला जाय।

लेकिन मैं दुख के साथ कहना चाहता हूं कि यह विधेयक मामूली विधेयक नहीं है। इस विधेयक को ऐसे समय नहीं लाना चाहिए था। और जब आया है तो जिस में ईश्वर के अस्तित्व को प्रतिष्ठित करा जा रहा है कानून के जरिये तो उस पर चर्चा खुल कर होनी चाहिये।

लोक सभा में हमारे ही दल के एक साथी ने ईश्वर शब्द पर आपत्ति की थी और जिस दिन प्रधान मंत्री की वोटिंग भी थी, सरकारी पक्ष बच गया था, उस पर करारी वोटिंग हुई, यह जानते हुए कि हम लोग यहां हैं जो अपने जजबात का इजहार निर्भीकता से करेंगे, हम यह नही कहेंगे कि मुसलमानों का वोट लेने के लिये हम मुसलमान हो गये। हम इनसान हैं, न मुसलमान हैं और न हिन्दू हैं। इसलिये मैं आप के द्वारा सदन से निवेदन कर रहा हूं कि विधेयक नन्हा सा है, छोटा सा, साधु है, निर्दोष है, मगर बिहारी के दोहे की तरह इतनी करारी मार कर रहा है कि सारे समाज के ढांचे को प्रभावी कर रहा है। समाज का प्रत्येक प्राणी विश्व का जन आज इस विधेयक के इस अंग से संबंधित है, इस लिये इतने बड़े विधेयक को हल्के तरीके से यहां पर लाकर रखना और कहना कि इसको पास कर दिया जाय यह अज्ञानता का द्योतक है। इसलिये मैं इसका विरोध करता हूं और आप की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए बैठ जाता हूं, और यह चेतावनी देना चाहता हूं कि इस तरह का अनर्गल विधेयक सदन में लाकर बिना सोचे समझे और बिना उस की सफ़ाई देने की क्षमता रखते हुए सदन के समय को नष्ट करने की नापाक कोशिश मंत्रीगण न किया करें।

विधि मंत्रालय तथा समाज कल्याण विभाग में उप मंत्री (श्री मुहम्मद यूनस सलीम) : साहब इस में कोई नई बात नही है। सिर्फ़ यह कहना है कि यह बिल यहां से मंजूर हो चुका है, लोक सभा से भी मंजूर हो चुका है . . .

श्री राजनारायण : मूंदहु आंख कतऊं कोऊ नाही। आंख बन्द कर ली जाय दुनिया में कोई है ही नही।

श्री मुहम्मद यूनस सलीम : यह बिल 14 फ़रवरी, 1968 को मंजूर हुआ था उस के बाद लोक सभा में गया। वहां पहली दिसम्बर को मंजूर हुआ। तो चूंकि बिल में यह था कि 19 वा साल और 1968, अब महज इसलिये लाये है कि 19 की जगह 20 कर दें और 1969 की जगह 1970 कर दें। इसमें कोई डिबेटबिल पांइट नहीं है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI D. THENGARI) : The question is:

"That the following amendments made by the Lok Sabha in the Oaths Bill, 1968, be taken into consideration, namely :—

Enacting Formula

1. That at page 1, line 1, for "Nineteenth" substitute "Twentieth".

Clause 1

2. That at page 1, line 3, for "1968" substitute "1969".

The motion was adopted.

SHRI MOHAMMED YUNUS SALEEM : Sir, I move :

"That the amendments made by the Lok Sabha in the Bill be agreed to."

The question was put and the motion was adopted.